

धोरण : 9

हिन्दी

२४. कबीर के दोहे

स्वाध्याय

प्रश्न 1. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) मृग कस्तूरी को कहाँ ढूँढ़ता है?

➤ मृग कस्तूरी को वन में इधर-उधर ढूँढ़ता है।

(2) हमारा जन्म कृतार्थ करने के लिए किसकी सेवा करनी चाहिए?

➤ हमारा जन्म कृतार्थ करने के लिए हमें संतों की सेवा करनी चाहिए।

(3) भवसागर तरने के लिए कौन-कौन से पाँच तत्त्व हैं?

➤ भवसागर तैरने के लिए ये पाँच तत्त्व हैं - साधु का मिलना, हरिभजन, दया की भावना, नम्रता और परोपकार।

प्रश्न 2. निम्नलिखित भावार्थवाले दोहे ढूँढकर उनका गान कीजिए :

(1) परमात्मा घट-घट में व्याप्त है, फिर भी हम देख नहीं पाते हैं।

➤ कस्तूरी कुंडली बसै, मृग ढूँढे वन माहिं।

ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया देखे नाहिं॥

(2) हमें जो कुछ मिला है, वह ईश्वर का ही है और वह ईश्वर को सौंपने से अपना कुछ नहीं रहता है।

➤ मेरा मुझमें कछु नहीं, जो कछु हय सो तेरा।

तेरा तुझको सौंपते, क्या लगेगा मेरा॥

(3) अप्रामाणिक रूप से संपत्ति इकट्ठी करके उसमें से दान करने पर स्वर्गप्राप्ति नहीं हो सकती है।

➤ **एहरन की चोरी करे, करे सुई का दान।
ऊँचे चढ़कर देखते, कैतिक दूर विमान।।**

(4) दूसरों की संपत्ति देखकर दुःखी होने के बजाय ईश्वर ने हमें जो कुछ दिया है, उसमें संतोष रखना चाहिए।

➤ **रूखा-सूखा खाई के, ठंडा पानी पीव।
देखि पराई चूपड़ी, मत ललचावै जीव।।**

प्रश्न 3. निम्नलिखित दोहों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

(1) संत मिले सुख उपजे, दुष्ट मिले दुःख होय।

सेवा किजे संत की, तो जनम् कृतार्थ सोय ॥

➤ संत के मिलने पर सुख का अनुभव होता है और दुष्ट के मिलने पर मन दुःखी हो जाता है। इसलिए संत की सेवा कीजिए। उससे तुम्हारा जन्म सफल होगा।

(2) सोना सज्जन साधु जन, टूटि जरै सौ बार।

दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार ॥

- सोना, सज्जन और साधु लोग रुठने पर भी बार-बार जुड़ते रहते हैं। सज्जन अच्छे लोगों से संबंध बनाकर उसे कायम रखते हैं। जबकि दुर्जन लोगों का व्यवहार इससे उलटा है। जैसे जरा-सी दरारवाले मटके को थोड़ा धक्का मारने पर फूट जाता है, ठीक उसी तरह दुर्जन व्यक्ति टूटते हुए संबंध को पूरी तरह तोड़ देने में संकोच नहीं करते।

(3) काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चुनाय।

ता चढि मुल्ला बाँग दै, क्या बहिरा हुआ खुदाय ॥

➤ कंकड़-पत्थर जोड़कर मस्जिद बनाई और उस पर चढ़कर मुल्ला बाँग देने लगा । कबीर पूछते हैं कि खुदा क्या बहरा हो गया है जो उसे इस तरह जोर से पुकारने की जरूरत पड़ती है।

(4) दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।

जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय ॥

➤ दुःख में सब लोग भगवान को याद करते हैं, सुख में उसे कोई याद नहीं करता। यदि सुख में भगवान को याद किया जाए तो दुःख आए ही क्यों?

THANKS



FOR WATCHING